चर्चा पत्र

शिक्षकों को आपस में
अकादमिक चर्चाओं में
सहयोग हेतु

माह- जून, 2022

अष्ठम वर्ष अंक -01

राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़

एजेंडा एक: नए सत्र की तैयारी

नया सत्र प्रारंभ होने जा रहा है। लाकडाउन की वजह से हुए दो वर्षों के नुकसान के बाद यह तीसरा वर्ष होगा जिसमें यदि सब कुछ ठीक रहा तो अब तक हुए नुकसान की भरपाई कर सकेंगे। बच्चों की नियमित स्कूल जाने की आदत छूट गयी है। बच्चों का मन पढाई से ऊब चुका है। बहुत समय तक स्कूल से बाहर एवं दोस्तों से दूर रहने से उनके समाजीकरण में भी समस्या आई है। नया सीखने के लिए आवश्यक मूलभूत दक्षताएं एवं पुरानी कक्षाओं के बहुत से लर्निंग आउटकम उन्होंने नहीं सीखा है। इन सबको और इनके अलावा भी बहुत सी समस्याएँ होंगी जिन्हें शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में इस सत्र में अनुभव करने को मिलेगा। ऐसे मुद्दों पर सत्र के शुरू में ही हम सबको मिलकर चर्चा एवं गहन विचार-मंथन कर सुधार हेतु आवश्यक प्रयास करने होंगे। अपने संकुल के समस्त शिक्षकों के साथ सत्र प्रारंभ होने से पूर्व एक चिंतन शिविर का आयोजन कर निम्नलिखित मुद्दों पर अपनी रणनीति निर्धारित कर लेवें-

i. शाला प्रवेशोत्सव के आयोजन हेतु रणनीति का निर्धारण कर इसे केवल एक औपचारिकता के बजाय वास्तव में सभी को प्रवेश दिलवाना

ii. संकुल के भीतर के स्कूल जाने योग्य आयु-वर्ग के सभी बच्चों का शाला में प्रवेश एवं पांच आयु वर्ग के बच्चों को बालवाडी खुलने पर उसमें प्रवेश

iii. बच्चों की अनियमित उपस्थिति के कारणों को पता कर प्रत्येक बच्चे की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक कार्यवाहियां

iv. संकुल के भीतर की शालाओं के बीच आपस में संसाधनों (विशेषज्ञ शिक्षक/ मैदान/ पुस्तकालय/ प्रयोगशाला/ TLM...) को साझा करने हेतु द्विनिंग ऑफ़ स्कूल योजना के क्रियान्वयन हेतु योजना

v. सभी बच्चों में मूलभूत दक्षताओं को हासिल करने हेतु आवश्यक प्रयास करते हुए पर्याप्त अभ्यास के अवसर देना। शाला से बाहर के बच्चों को भी मूलभूत दक्षताएं हासिल करने हेतु रणनीति

vi. पूर्व की कक्षाओं में छूट गए परन्तु आगे की कक्षाओं के लिए आवश्यक दक्षताओं की पहचान कर उनको सीखने के अवसर देने हेतु उपचारात्मक शिक्षण के लिए एक बेहतर मॉडल का चयन कर उसे लागू करना

vii. इस सत्र में अधिक से अधिक सामुदायिक सहभागिता लेने हेतु पहल एवं सहयोग के क्षेत्रों का निर्धारण (मुख्यतः सीखने-सिखाने से संबंधित)

viii. शाला समय में एवं शाला समय से अलग समय में बच्चों को सीखने में सहयोग देने हेतु स्थानीय कुशल व्यक्तियों की पहचान कर उन्हें जिम्मेदारी देते हुए सहयोग हेतु विद्यान्ज्ली पोर्टल में प्रविष्टि कर उल्लेख

ix. शाला परिसर एवं गाँव को प्रिंट-रिच बनाने हेतु आवश्यक उपाय

x. स्थानीय कलाकारों/कुशल कारीगरों का सहयोग लेकर बच्चों को विभिन्न व्यवसायों/ कौशलों के परिचित करवाने बस्ता-विहीन कक्षाएं

xi. पूरे सत्र में सीखने-सिखाने में सहयोग हेतु मिलकर सहायक सामग्री निर्माण कर एक दूसरे से साझा करना

xii. सभी शालाओं में अनिवार्य रूप से प्रत्येक कक्षा के लिए पॉकेट बोर्ड का निर्माण एवं उसमें उपयोग हेतु फ्लेश कार्ड तैयार करना

xiii. प्राथमिक शालाओं में खिलौना कार्नर, कठपुतली एवं मुखौटे तैयार कर उसे बच्चों की पहुंच में, उपयोग हेतु रखना

xiv. शिक्षकों का अधिक से अधिक समय बच्चों के सीखने-सिखाने से संबंधित गतिविधियों में व्यतीत होना

xv. मुस्कान पुस्तकालय को व्यवस्थित कर उसमें उपलब्ध पुस्तकों का स्तरीकरण करते हुए बच्चों को नियमित पढने हेतु रुचि विकसित करना

अपने अपने संकुल में सभी शिक्षकों के साथ विचार-विमर्श कर उपरोक्त बिन्दुओं पर प्रत्येक शाला में कार्य करने हेतु आवश्यक तैयारी करने हेतु आपसी सहमति से निर्णय लेवें। बच्चों को नवीन सत्र में शुरुआत से ही व्यवहार परिवर्तन एवं पढाई को गंभीरता से लेने नियमित कक्षाओं में उपस्थिति पर जोर देवें।

एजेंडा दो: बालवाडी की आवश्यकता एवं लाभ

राज्य में बालवाडी खोलने का प्रमुख उद्देश्य छोटे आयु वर्ग के बच्चों को उनके आयु अनुरूप लर्निंग आउटकम हासिल करने की दिशा में प्रयास करना है। सीखने के शुरुआती दौर में जब मस्तिष्क का विकास बहुत तेजी से हो रहा हो उस समय उन्हें सीखने के लिए पर्याप्त अवसर देने की आवश्यकता होती है। ऐसा करने से आगे की कक्षाओं में सीखना बहुत आसान हो जाता है। इसे इस प्रकार भी समझ सकते हैं। आप लंबी दूरी के लिए सायकल में यात्रा करने निकल रहे हैं। यदि आपने निकलने से पहले टायर में ठीक से हवा नहीं भरी तो पूरे यात्रा में आपको परेशानी होगी। सायकल चलाने में दिक्कत होगी। ठीक उसी प्रकार यदि शुरुआती दौर में जब बच्चे सीखने के लिए तैयार हों, तब यदि हम सीखने हेतु पर्याप्त अवसर न दे सकें, तो आगे की कक्षाओं में उन्हें सीखने में हमेशा दिक्कतें होंगी।

बालवाडी खोले जाने संबंधी उद्देश्य की प्राप्ति तभी हो सकेगी जब इस आयु-वर्ग से समस्त बच्चे इस योजना का लाभ ले सके और बालवाडी में प्रवेश ले सके।

इस हेतु इस कार्यक्रम का व्यापक प्रचार-प्रसार करते हुए 5 आयु-वर्ग के सभी बच्चों को नए खोले जा रहे बालवाडियों में प्रवेश दिलवाया जाना होगा। छोटे आयु वर्ग के बच्चों को भी समय-समय पर निकट के प्राथमिक स्कूलों में ट्विनिंग ऑफ़ स्कूल कार्यक्रम के अंतर्गत अनुभव लेने का अवसर दिया जाएगा। शाला प्रबन्धन समिति एवं पालकों की बैठक लेकर उन्हें 5 आयु-वर्ग के बच्चों को नियमित बालवाड़ी भेजे जाने हेतु प्रेरित किया जाएगा।

प्रचार-प्रसार हेतु निम्नलिखित मीडिया का इस्तेमाल आप कर सकते हैं -

- पंचायत द्वारा कोटवारों के माध्यम से योजना के संबंध में मुनादी करवाया जाना
- चयनित गाँवों की दीवारों पर नारा/ स्लोगन लेखन के माध्यम से जागरूकता
- प्रिंट एवं ऑडियो मीडिया के माध्यम से विज्ञापन तैयार कर प्रचार-प्रसार

प्रथम चरण में राज्य में कुल 6536 प्राथमिक शालाओं का चयन बालवाडी संचालन हेतु किया गया है। ये ऐसी शालाएं हैं जहां आंगनबाडी और प्राथमिक शाला एक ही परिसर में अथवा आसपास हैं एवं प्राथमिक शालाओं में अध्यापन हेतु तीन शिक्षक उपलब्ध है जिनमें से एक निकट के आंगनबाडी में जाकर दो घंटे वहां के बच्चों के साथ काम कर सकता है।

राज्य में पचास हजार से अधिक आँगनबाडी संचालित हैं। इनमें अध्ययनरत बच्चों को भी इस आयुवर्ग में सीखना आवश्यक है। ऐसे में इन आंगनबाडी में प्रवेश ले चुके बच्चों के सीखने के लिए हम आपस में मिलकर क्या-क्या प्रयास कर सकते हैं ? इस हेतु रणनीति निर्धारित करने अपने अपने संकुल में प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों एवं आंगनबाडी कार्यकर्त्ता एवं सुपरवाईजर्स के साथ मिलकर बैठक का आयोजन कर सकते हैं। इस बैठक में निम्नलिखित मुद्दों पर बातचीत कर निर्णय लिया जा सकता है-

- जिन प्राथमिक शालाओं से आंगनबाडी दूर है, ऐसे स्थानों के लिए अभी से समुदाय की इच्छानुसार बालवाडी संचालित करने हेतु कुछ अलग **मॉडल** की पायलटिंग किया जाना प्रस्तावित है।
- **मॉडल एक:** प्राथमिक शाला के शिक्षक मेंटर के रूप में समय समय पर निकट के आंगनबाडी की कार्यकर्ता का उन्मुखीकरण करते हुए उन्हें निरंतर मेंटरशिप प्रदान करते हुए आंगनबाडी में ही बालवाडी का संचालन
- **मॉडल दो:** समुदाय द्वारा शिक्षक उपलब्धता की स्थिति में प्राथमिक शाला में ही बालवाडी को संचालित किया जाना
- **मॉडल तीन:** आप आपस में चर्चा कर कोई नवाचारी तरीका सोचें
- सामुदायिक सहभागिता सुनिश्चित करने माताओं का उन्मुखीकरण करते हुए प्रत्येक ग्राम में स्मार्ट माताओं का चयन कर उन्हें प्रोत्साहित किया जाएगा।
- सामुदायिक सहभागिता के अंतर्गत प्रत्येक बालवाड़ी में हितग्राहियों को आमंत्रित कर bottom-up approach से कार्यक्रम क्रियान्वयन योजना बनाई जाए। इस हेतु राज्य स्तर से सामग्री तैयार कर टेलीग्राम में उपलब्ध करवाई गयी है।

एजेंडा तीन: बालवाडी के संचालन हेतु bottom-up planning

यह सर्वमान्य तथ्य है कि छोटी उम्र में बच्चों के मस्तिष्क के विकास की गति बहुत तेज होती है और इस उम्र में सीखना बहुत आसान होता है। इसीलिए देर से ही सही, अब प्राथमिक शालाओं के साथ एक छोटी कक्षा बालवाडी के रूप में खोले जाने का निर्णय लिया गया है। इस उम्र के बच्चों को यदि हम अच्छे से सीखने में सहयोग दे सकें तो आगे की कक्षाओं में सीखना बहुत आसान हो जाएगा। क्या हम अपने स्तर पर बिना किसी बाह्य सहायता या निर्देश के इस दिशा में काम कर सकते हैं?

सभी स्कूलों एवं गाँवों में परिस्थितियाँ अलग-अलग होती हैं। इसलिए एक प्रकार की कोई योजना या सभी के लिए एक प्रकार के निर्देश कारगर नहीं हो सकते। इसके लिए सभी हितग्राहियों को आमंत्रित कर अपने क्षेत्र में बालवाडी के सफल क्रियान्वयन हेतु मिलकर योजना बनाए जाने से ही कोई कार्यक्रम सफल हो सकेगा। इस हेतु निम्नलिखित चरणों का पालन करना होगा-

- बालवाडी योजना में सभी की सहभागिता के लिए सभी हितग्राहियों को एक उपयुक्त तिथि एवं समय का निर्धारण कर उन्हें आमंत्रित करें
- योजना निर्माण हेतु क्षेत्र से कम से कम दो ऐसे व्यक्तियों का चयन करें जो पूरी प्रक्रिया को आगे लेकर जाने एवं योजना को मूर्तरूप देने हेतु सुविधादाता की भूमिका निभाएंगे। कोशिश करें कि इसमें से एक व्यक्ति स्कूल शिक्षा विभाग से एवं एक व्यक्ति माहिला एवं बाल विकास विभाग से लिया जाना बेहतर होगा ताकि दोनों विभागों के समन्वय से कार्य आगे बढ़ सके
- योजना निर्माण हेतु विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने हेतु बिन्दुवार मुद्दे निर्धारित कर प्रत्येक बिंदु पर हितग्राहियों के मध्य चर्चा करवाते हुए अपनी परिस्थिति के अनुरूप उचित निर्णय लेने हेतु प्रोत्साहित करें
- हितग्राहियों द्वारा लिए जा रहे निर्णय का प्लान आगामी सत्र खुलने से पहले कर लिया जाना सुनिश्चित करना होगा। इस हेतु संसाधन मैपिंग एवं समयसीमा आदि निर्धारित कर कार्य प्रारंभ करना होगा
- बैठक में चर्चा हेतु राज्य स्तर पर एक पुस्तिका तैयार है जिसका अध्ययन कर इस प्रक्रिया को आप अपने अपन क्षेत्र में कर सकते हैं। टेलीग्राम ग्रुप में उपलब्ध।

एजेंडा चार: बालवाडी में सीखने-सिखाने हेतु सामग्री

FLN के लक्ष्यों को समय पर प्राप्त करने एवं छोटे बच्चों को सीखने में सहयोग करने हेतु हम सबको मिलकर स्थानीय स्तर पर निम्नलिखित सामग्री बनाकर उपयोग हेतु उपलब्ध करवाई जानी होगी:

छोटे बच्चों को उनकी अपनी भाषा में सीखने-सिखाने की व्यवस्था करनी चाहिए। इस हेतु जिले में तत्काल निम्नलिखित कार्य किया जाना सुनिश्चित करें-

i. जिले में प्रचलित स्थानीय भाषा में सामग्री बनाए जाने उन स्थानीय भाषा का चयन कर उस भाषा में विशेषज्ञता वाले कम से कम दस से पन्द्रह शिक्षकों एवं समुदाय से सदस्यों का चयन कर एक स्थानीय सामग्री विकास दल का गठन कर उन्हें इसकी जिम्मेदारी देवें। ग्रुप बना लेवें।

ii. इस ग्रुप को छोटे बच्चों को सीखने में सहयोग करने हेतु गीत-कविता, कहानी, बिग बुक, वार्तालाप पुस्तिका, मुहावरे, चुटकुले, पहेलियां आदि एकत्र करने, विकसित करने की जिम्मेदारी देवें।

iii. तैयार की जा रही सामग्री के टंकन एवं बच्चों के साथ प्रत्येक सामग्री के परीक्षण/ पायलटिंग के लिए भी उचित व्यवस्था करें ताकि सामग्री विकसित करने के साथ-साथ यह भी पता लगाया जा सके कि सामग्री बच्चों के लिए उपयुक्त है अथवा नहीं।

iv. परीक्षण में उपयुक्त पाए जाने पर संकलित सामग्री को व्यवस्थित कर बढ़िया डिजाइन कर उसे सभी प्राथमिक शालाओं में पहुंचाए जाने हेतु आवश्यक व्यवस्थाएं करें।

v. तैयार सामग्री की ऑडियो एवं वीडियो तैयार करने हेतु एक टीम बनाकर अंतिम रूप से तैयार सामग्री को विशेषज्ञ टीम से साथ-साथ ऑडियो/ वीडियो प्रारूप में तैयार कर संबंधित शिक्षकों तक भेजा जाना सुनिश्चित करें।

vi. सभी प्राथमिक शालाओं में खिलौना/ कठपुतली/मुखौटा कार्नर एवं सहायक सामग्री भी तैयार कर उपलब्ध करवाएं।

एजेंडा पांच: पढई तुंहर दुआर 3.0

कोविड-लाकडाउन की वजह से बच्चों को स्कूल से, उनके दोस्तों से, समाजीकरण की प्रक्रिया से अलग रहना पड़ा है | ऐसे में अन्तर्मुखी हो रहे बच्चों के व्यक्तित्व विकास हेतु राज्य की ओर से विशेष प्रयासों की आवश्यकता है | स्कूल स्तर पर विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिता परीक्षा होने से बच्चों में प्रतिभा का विकास होता है। खासकर कमजोर बच्चों को आगे बढ़ने में सहायक होता है । इसलिए गुणवत्तापूर्ण व अच्छी शिक्षा के साथ-साथ हर क्षेत्र में बच्चों के बीच स्वस्थ प्रतियोगिता होनी चाहिए। पढई तुंहर दुआर 3.0 में बच्चों के बीच निम्नलिखित क्षेत्रों में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा–

I. *निबन्ध प्रतियोगिता*
II. *पूर्व-प्रदत्त विषयों में तैयारी के साथ भाषण प्रतियोगिता*
III. *आशु अथवा तात्कालिक भाषण*
IV. *चित्रकला प्रतियोगिता*
V. *संगीत प्रतियोगिता*
VI. *खेल प्रतियोगिता*
VII. *विज्ञान प्रोजेक्ट प्रदर्शन प्रतियोगिता*
VIII. *मौखिक गणित या स्पीड गणित पर आधारित प्रतियोगिताएं*
IX. *गणित एवं विज्ञान ओलंपियाड*
X. *सामान्य ज्ञान पर आधारित क्विज प्रतियोगिता*

प्रत्येक बच्चे को किसी न किसी प्रतियोगिता में शामिल होना अनिवार्य होगा | इन प्रतियोगिताओं में बच्चों को तैयारी करने हेतु ग्रीष्मकाल से ही समर कैम्प आदि के आयोजन करने हेतु समुदाय एवं पालकों को प्रेरित किया जाएगा | विभिन्न स्तरों पर सहभागिता ले रहे एवं विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार का प्रावधान किया जाएगा | सभी बच्चों को घर पर एवं बाहर ऐसी प्रतियोगिताओं हेतु अभी से तैयार करें ताकि उनके व्यक्तित्व का सही दिशा में विकास हो सके |

एजेंडा छह: शाला संकुल व्यवस्था में कसावट लाना -सेमीनार

राज्य में सभी हाई/ हायर सेकन्डरी स्कूलों को शाला संकुल बनाते हुए उनके प्राचार्यों को शाला संकुल का प्रमुख बनाते हुए उनके संकुल में पूर्व प्राथमिक से लेकर हायर सेकंडरी तक के गुणवत्ता की पूरी जिम्मेदारी प्राचार्यों को दी गयी है। इस कार्य में उनकी सहायता के लिए संकुल समन्वयक उपलब्ध करवाए गए हैं। इन दोनों के कुशल नेतृत्व में सभी संकुलों को अकादमिक गुणवत्ता विकास की दिशा में कार्य करते हुए अपेक्षित आउटकम की संप्राप्ति अपेक्षित है।

शाला संकुल से अपेक्षा है कि वे अपने संकुल की सभी शालाओं में-

- माह में कम से कम दो बार प्रत्येक शाला का निरीक्षण कर सुधार करना
- प्रत्येक शाला में सभी बच्चों को FLN के लक्ष्यों को अनिवार्यतः प्राप्त करने में सहयोग प्रदान करते हुए इस दिशा में हो रही प्रगति की सतत निगरानी करना
- शालाओं में वितरित करवाई जाने वाले संसाधनों की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित करते हुए सभी संबंधितों को वितरण कर उपयोग सुनिश्चित करना
- शिक्षकों के सतत क्षमता विकास हेतु विभिन्न विषयों में प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी का गठन कर उन्हें निरंतर समर्थन देना
- संकुल स्तर पर प्रतिमाह अनिवार्यतः नियमित मासिक बैठक आयोजित कर अकादमिक गुणवत्ता पर चर्चा करने चर्चा पत्र के दसों एजेंडा का वाचन एवं उन्हें कक्षाओं में लागू करने हेतु एकमत होकर स्थानीय परिस्थिति अनुसार निर्णय
- राज्य द्वारा जारी विभिन्न अकादमिक दिशानिर्देशों को सभी शालाओं एवं शिक्षकों तक पहुंचाते हुए उनका शत-प्रतिशत पालन सुनिश्चित करना

शिक्षकों को स्व-आकलन में उनके द्वारा सेमीनारों में सहभागिता एवं पत्र-पत्रिकाओं में आलेखों के छपने पर अंक निर्धारित हैं। संकुल से लेकर राज्य स्तर पर इस विषय में एक सेमीनार का आयोजन किया जाएगा जिसका विषय होगा- "शाला संकुल व्यवस्था में कसावट लाते हुए बच्चों की उपलब्धि में सुधार लाने हेतु मेरे संकुल की कार्ययोजना" सेमीनार में सहभागिता हेतु आवश्यक तैयारी कर लेवें एवं इस हेतु मिलकर कार्ययोजना बना लेवें। सेमीनारों की तिथियों से आपको शीघ्र अवगत करवाया जाएगा।

एजेंडा सात: आकलन हेतु मूलमन्त्र (शिक्षकों के आलेख)

आकलन पर विगत कई वर्षों से बहुत सारी बातें होती रहती हैं | बहुत सारे दिशानिर्देश भी मिलते रहते हैं | मैं यहाँ आकलन से संबंधित अपना एक अनुभव सुनाना चाहूंगा | मैंने पाचन तन्त्र का पाठ समाप्त किया और आकलन हेतु मुझे बच्चों से पाचन तन्त्र का चित्र बनवाना था | मैंने इस गतिविधि के लिए कुछ चिंतन किया, कुछ मनन किया, कुछ रणनीति बनाई | आज इस आलेख के माध्यम से मैं अपने इस अनुभव को आपके समक्ष रख रहा हूँ, आपकी राय अपेक्षित है !

मैंने बच्चों को दीवार पर लगे चार्ट या अपनी पुस्तक को देखकर पाचन तन्त्र का चित्र बनाने का कक्षा कार्य दिया | बच्चों ने लगभग पन्द्रह मिनट में अपनी अपनी कापी में चित्र बनाकर मेरे पास जमा किया | मैंने उन बीस कापियों को देखकर बच्चों को ग्रेड देकर कापी वापस की | दो बच्चों को "ए" ग्रेड मिला था और अधिकांश "सी" और "डी" ग्रेड में थे | बच्चों की जिज्ञासा को शांत करने "ए" ग्रेड देने के कारणों की जानकारी दी | बच्चों को अब समझ में आ गया कि कैसे चित्र बनाने से "ए" ग्रेड मिलेगा | बच्चों ने मुझसे अनुरोध किया कि क्या हम दुबारा उस चित्र को बनाकर अपनी कापी जमा कर सकते हैं ? मैंने उनके सीखने एवं सुधार की ललक देखकर तुरंत हामी भरी | इस बार बहुत से बच्चों को "ए" और "बी" ग्रेड मिला | किसी को भी "डी" ग्रेड नहीं मिला |

पुनः कुछ बच्चों ने इस चित्र को दुबारा बनाने की अनुमति माँगी | इस बार मैंने इस शर्त के साथ अनुमति दी कि यह उनके लिए आख़िरी अवसर होगा और उन्हें चित्र अवकाश के समय बनाना होगा | इस अवसर का लाभ और भी बच्चों ने उठाया जिन्हें कमजोर ग्रेड मिले थे | आश्चर्य ! इस बार जब मैंने कापी जांची, मेरी कक्षा के सभी बच्चे अब उस दक्षता में "ए" ग्रेड में पहुँच गए थे |

साथियों मैंने आपकी कक्षा में आकलन के लिए कौन कौन सी रणनीति अपनाई जिसका लाभ मुझे मिला ? मुझे बहुत अधिक मेहनत नहीं करनी पडी और सारे के सारे बच्चे "ए" ग्रेड में पहुंच गए !

मनोज कुमार साहू, शिक्षक, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला हिर्री, विकासखंड धमधा, जिला दुर्ग छत्तीसगढ़

साथियों हम एक नया स्तंभ शुरू कर रहे हैं जिसमें शिक्षकों के आलेखों को स्थान दिया जाएगा | ऐसे आलेख जिसके आधार पर पाठक चर्चा कर सके, कुछ चिंतन कर सके और अपनी कक्षा में उसे लागू कर सके |

एजेंडा आठ: FLN हेतु चुनौती

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत सबसे पहला लक्ष्य सभी बच्चों में निपुण भारत के लक्ष्यों को यथाशीघ्र हासिल करना है। सभी बच्चों को ठीक से पढ़ना-लिखना और गणित के सवाल करना आ जाए। यदि सोच-समझकर जिम्मेदारी के साथ हम सब मिलकर ठान कर पूर्ण लगन के साथ काम करें तो इस लक्ष्य को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

हमारे नायक में अभी हम जो श्रृंखला चला रहे हैं उसमें शिक्षक या समुदाय को अपने यहाँ सभी बच्चों ने FLN लक्ष्य प्राप्त कर लिया है इसके संबंध में तथ्यों की पडताल कर चुनौती देने को प्रोत्साहित करें। ऐसे शिक्षक या समुदाय अपने उच्चाधिकारियों को अपने यहाँ की स्थिति से अवगत करवाते हुए उन्हें आकर बच्चों का FLN के सन्दर्भ में आकलन करने का अनुरोध करें।

ऐसे स्कूलों में अधिकारी जाकर बच्चों का आकलन कर चुनौती को सही पाए जाने पर उस स्कूल के प्रधान पाठक को हमारे नायक एक रूप में प्रस्तावित करने की घोषणा करना है। इस पूरे प्रक्रिया की वीडियो बनाकर भेजने पर अच्छी क्वालिटी के वीडियो और स्तर को देखकर उनमें से हमारे नायक का चयन किया जा रहा है। आप भी ऐसी परंपरा अपने अपने क्षेत्रों में प्रारंभ कर सकते हैं। समुदाय को भी प्रोत्साहित कर सकते हैं कि वे अपने क्षेत्र के बच्चों को FLN में दक्ष करने अतिरिक्त मेहनत कर चुनौती भेजें।

इस प्रक्रिया को एक टीम के रूप में क्रमशः संकुल, विकासखंड एवं जिले स्तर पर कर सकते हैं। संकुल समन्वयक अपने संकुल के सभी शालाओं में सभी विद्यार्थियों द्वारा FLN के दक्षताओं की प्राप्ति की चुनौती देने, इसी प्रकार विभिन्न विकासखंड स्तरीय अधिकारी अपने अपने विकासखंड के सभी संकुलों के विद्यार्थियों द्वारा FLN की दक्षताओं के प्राप्ति की दिशा में कार्य करते हुए सभी विद्यार्थियों द्वारा इनकी प्राप्ति के संबंध में घोषणा कर चुनौती देने का कल्चर प्रारंभ करें। देखें कि राज्य में कौन सा संकुल एवं कौन सा विकासखंड सबसे पहले इस दिशा में कार्य कर निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर पता है।

आपसे अनुरोध है कि अपने अपने स्तर पर ऐसी चुनौतियां देने हेतु सभी आवश्यक तैयारियां कर राज्य में FLN की स्थिति में सुधार करें और नायक बनें।

एजेंडा नौ: बच्चों द्वारा स्वतंत्र कहानी लेखन (आगामी अंक के लिए)

बच्चे लंबी छुट्टियां बिताकर आपके पास स्कूल आयेंगे। जहां जहां आपने समर कैम्प लगवाकर उनका सीखना जारी नही रखा होगा वहां वहां बच्चे पढ़ने लिखने की गतिविधि में वापस आने में थोड़ी दिक्कत महसूस करेंगे। आप अपने अपने स्कूल में कक्षा दूसरी तक के बच्चों को अपने मन से कोई चित्र बनाने एवं कक्षा तीसरी से ऊपर की कक्षाओं के बच्चों के साथ स्वतंत्र लेखन हेतु उनकी अपनी पसंद की कोई कहानी या घटना लिखने का अवसर दे सकते हैं। इन बातों को ध्यान में रखें-

- बच्चों को ए फोर साइज़ के कोरे कागज़ देकर लिखने का अवसर देवें
- कोई टॉपिक न देकर उन्हें अपनी इच्छा से लिखने का अवसर देवें
- उनको जो भी कहानी / घटना लिखनी हो, अपने मन से लिखने देवें
- एक निर्धारित समय के बाद उनके कहानियों को एकत्र कर लेवें
- इनमें से कुछ कहानियों को छांटकर उनकी एक पुस्तिका बनवाएं
- पुस्तिका बनाते समय टंकन करते समय बच्चों द्वारा उपयोग में लाए गए शब्दों एवं वाक्यों एवं मूल भाव को यथावत रहने देवें
- केवल मात्रा एवं भाषा संबंधी त्रुटियों को सुधार लेवें और टंकित करें
- आसपास अच्छे चित्रकार साथियों या बच्चों से प्रत्येक कहानी के लिए कुछ अच्छे स्थानीय चित्र जोड़कर एक अच्छी पुस्तिका का स्वरूप देवें
- इस प्रक्रिया के अपने पूरे अनुभव को आप लिखकर अगले अंक के लिए भेजें एवं तैयार पुस्तकों को एक-दूसरे के साथ ग्रुप में साझा करें
- बच्चों द्वारा तैयार इन पुस्तकों को हम अपने पुस्तकालय में रख सकते हैं

एजेंडा दस: NAS रिपोर्ट पर फीडबैक

इस बार हम सभी ने सरकारी स्कूलों में उपलब्धि परीक्षण में अच्छा स्थान हासिल करने हेतु बहुत मेहनत की थी। प्रत्येक जिले एवं विकासखंड में इस हेतु नोडल अधिकारी बनाकर पूछे जाने वाले प्रश्नों के पैटर्न साझा करते हुए नियमित अभ्यास के अवसर दिए गए थे। फिर ऐसा क्या हुआ कि हम इतने निचले पायदान पर आ गए। कृपया इस पर छोटे छोटे समूह में मंथन कर विशेषकर NAS सेम्पल स्कूलों को शामिल कर प्राप्त फीडबैक से हमें flnideaschhattisgarh@gmail.com अवगत करावें। हम सबको स्थिति में सुधार हेतु एवं बेहतर रणनीति से साथ आगे मिलकर कार्य करना होगा।